Research Paper Literature

Shamsher Bahadur Sinh ki Kavitao me Vimbvidhan

षमषेर बहादुर सिंह की कविताओं में विम्बविधान

Bimla

Assistant Professor,Hindi Dep,C.R.M.JAT P.G. Collage,Hisar.

असिस्टैन्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग सी.आर.एम.जाट पी.जी. कॉलेज,हिसार

KEYWORDS

कवि की काव्य भाशा के निर्धारक तत्वों में सबसे महत्वपूर्ण है – 'बिम्ब'। षमषेर ऐसे कवित हें जो बिम्बों के जरिए ही अपनी बात कहना चाहते हैं। इसका कारण यह है कि षमषेर जिन अनुभवों को व्यक्त करते हैं वे ज्यादातर ऐन्द्रिय होते हैं। इस ऐन्दि. ायता के कारण ही उनकी भाशा ऐसे रूप ग्रहण कर लेती है जिसका सम्प्रेशण अधि ाकतर प्रत्यक्षीकरण के स्तर पर होता है।

वस्तुतः भाशा की प्रकृति ही विम्बात्मक होती है पर भाशा चूंकि दैनिक प्रयोग में मंतजी और घिसती रहती है। इसीलिए धीरे–धीरे षब्द का चित्रात्मक स्वरूप नश्ट होता जाता है और फिर वह निजी भाव या विचार का प्रतीक मात्र रह जाता है और काव्य–भाशा के निर्माण का पहला चरण वहीं से षुरू होता है। कवि की पहली कोषिष यह होती है कि वह षब्द को फिर से उसकी खोई हुई चित्रात्मकता प्रदान करें। ऐसा करने के लिए उसे भाशा के स्वरूप को थोड़ा बदलना पड़ता है बहुत से स्थलों पर छूट लेनी होती है और प्रकृति और जीवन के नए क्षेत्रों में प्रवेष करना पड़ता है।

षमषेर जब ऐसा करते हैं तो हिन्दी काव्यभाशा की पूरी परम्परा से लाभ उठाते हुए भी उसे बहुत कुछ बदलने की कोषिष भी करते हैं। ऐसा करते हुए षमषेर वस्तुतः तीन अलग–अलग परम्पराओं का उपयोग करते हैं :

1. आधुनिक हिन्दी काव्य की परम्परा, जिससे सम्पूर्ण छायावादी काव्यभाशा का विकास हुआ और विषेशता निराला की काव्यभाशा इसके अन्तर्गत आती है जिसका थोड़ा बहुत प्रभाव षमषेर की षुरू की कविताओं पर है।

2. उर्दू कविता की परम्परा – जिसके अनेक मुहावरे और प्रतीक षमषेर की काव्यभ. ाशा में ढूंढे जा सकते हैं।

3. पष्चिम की आधुनिकवादी काव्य परम्परा जिसमें मुख्य रूप से फ्रांस के प्रतीकवादी कवि और अंग्रेजी के इलिपट, एजरापाऊन्ड और ई0ई0 कमिंग्स के भाशा सम्बन्धी प्रयोगें से षमषेर ने पर्याप्त लाभ उठाया है।

विषेश रूप से कर्मिंग्स के विलक्षण प्रयोगों के प्रभाव की बात तो षमषेर ने स्वयं 'दूस. रा सप्तक' के वक्तव्य में स्वीकार की है। बिम्ब :

कबूतरों ने एक गजल गुनगुनाई
मैं समझ न सका रदीफ काफिए क्या थे
इतना खफीफ इतना हल्का, इतना मीठा उनका दर्द था
मैं उसके पादों पर कोई सिजदा न बना सका
क्योंकि मेरे झुकते न झुकते
उसके पांवों की दिषा मेरी आंखों को लेकर खो गई थी।

षमषेर जिस भाव को मूर्त या प्रत्यक्ष करना चाहते हैं उसके निर्माण में इन षब्दों का महत्वपूर्ण योगदान है। यह षब्द बेषक उर्दू की परम्परा से आए हुए हैं और हिन्दी के पाठक के लिए चाहे वे किसी बाहरी परम्परा से आए हुए हैं स्वयं षमषेर के लिए वे एक ही व्यापक परम्परा के अंग है जिसमें हिन्दी और उर्दू दोनों ही घुली मिली है।

मैं इस तरह मुस्कराया
जैसे षाम के पानी में
डूबते पहाड़ गमगीन मुस्कराते हैं
गमगीन षब्द ही मुस्कुराहट के पीछे छिपी हुई पीड़ा को गहराई प्रदान करता है। बिम्बों में 'फ्री' ऐसोसियेष' पद्धति का प्रयोग है। जिसका प्रयोग आधुनिक अंग्रेजी कवितयों ने भी किया है। इस षैली में एक बिम्ब दूसरे बिम्ब से प्राय अलग दिखाई पड़ता है। उदाहरण –

''टूटी हुई बिखरी हुई चाय
की दली हुई पांव के नीचे,
पत्तियां।''

चाय की पतियां चित्र संकेत है। जिनको जोड़ने वाला कोई प्रत्यक्ष मनोभाव दृश्टिगा. चर नहीं हो रहा है। पर इन सबको एक साथ रखकर षमषेर ने किसी गहरे भाव की व्यंजना करने की कोषिष की है।

''मैं निराला के राम का एक आंसू,
जो तीसरे महायुद्ध के कठिन लोहपर्दों को
एटमी सुई सा पार कर गया पालल तक।

'राम के आँसू' का यह बिम्ब षमषेर, 'निराला की राम की षक्ति पूजा' के भीतर ले आए हैं और इस प्रकार इस बिम्ब का बहुत ही अच्छा इस्तेमाल किया है।

पष्चिम में काले और सफेद फूल है और पूरब में पीले और लाल,

उत्तर में नीचे कई रंग के और हमारे यहां चम्पई सांवले।

और दुनिया में हरियाली कहां नहीं,
जहां भी आसमान बादलों से जरा भी पौंछे जाते हो।
और आज गुलदस्तों में रंग–रंग के फूल सजे हुए हैं,
और आसमान इन खुषियों का आईना है।

षमषेर की कविता में आकर ये रंगों के विष्वात्मक प्रयोग पूरे मानव समुदाय के रंगों के चित्र संकेत बन गए हैं और इस तरह यहां पूरी भाशा एक बिल्कुल नया रूप ध ाारण कर लेती है। मेरी देहली से प्रह्लाद की तपस्याएं दोनों दुनियाओं की चौखट पर युद्ध के हिरण्यकष्यम को चीर रही है।

षमषेर के कुछ प्रमुख षब्द है जिनमें बिम्ब दिखाई पड़ते हैं – षाम, चाँदनी, सूर्य, फूल, पत्थर, पहाड़, गुलाब, बसन्त, मौन इत्यादि 'षाम' संभवतः षमषेर का सबसे प्रिय षब्द है। केवल इस एक षब्द को लेकर षमषेर ने अनेक बिम्बों की रचना की है, उदाहरण :

'एक पीली षाम
पतझड का जरा अटका हुआ पता'
ये षाम है
कि आसमान खेत है पके हुए अनाज का।
नींबू का नमकीन सा परबत षाम.... बहुत दूर तक बजती हुई षाम।'
'मैं इस तरह मुस्कराया
जैसे षाम के पानी में
डूबते पहाड़ गमगीन मुस्कराते हैं।

वैसे तो 'षाम' को लेकर और भी बहुत सी पंक्तियां षमषेर की कविता में ढूंढी जा सकती है। इसी प्रकार हम 'चांदनी' षब्द को लेकर भी अनेक बिम्बों की रचना षमषेर के यहां देख सकते हैं:

'एक नीला आईना
बेठोस सी यह चांदनी,
चांदनी में घुल गए हैं
बहुत से तारे बहुत कुछ।

उन्होंने बिम्बों के माध्यम से 'चांदनी' का 'मानवीकरण' कर दिया गया है। इन दोनों के अर्थ को थोड़ा व्यापक बनाती है।

''नीलजल में या किसी की
गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो।

कवि ने 'सूर्य' के माध्यम से उसकी लाली, आकार, गतिमयता को सूचित करने वाले कई बिम्ब लाए गए हैं।

'अब
हो उठा है मौन का डर
और भी मौन'

इस कविता में कवि ने षोक के वातावरण का चित्रण किया है और यह 'मौन' दरअ. सल मृत्यु के बाद का मौन है।

षमषेर कुछ पुराने षब्दों का भी नए ढंग से प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए 'कोला. हल' षब्द जो 'छायावादी' कविताओं में मुख्य रूप से 'प्रसाद' की कविताओं में मिलता है। षमषेर की पंक्ति है–

'वह कोलाहल जो कोयलों से भरा है

सुनकर
तू विक्षुब्ध हो जाता
क्या उपनिशदों का षोर
उसे दबा पाता।'

यहां कवि ने 'कोयलों' से भरा 'कोलाहल' का बिम्ब अत्यन्त रोमाण्टिक बिम्ब है और इसके सामानन्तर यदि हम प्रसाद का यह बिम्ब रख दे तो इसकी समानियत और स्पश्ट हो जाएगी।

'अम्बर चुखी हिम श्रृगों से
कलख कोलाहल साथ लिए
विद्युत की प्राणमयी धारा
बहती जिसमें रसधार लिए।

परन्तु 'षमषेर' के 'कोलाहल' का बिम्ब प्रसाद से थोड़ा भिन्न इसलिए हो जाता है कि उस 'कोलाहल' की टक्कर एक और बिम्ब से हो रही है – 'उपनिशदों का षोर' और वस्तुतः कही इसमें यह संकेत भी है कि उपनिशदों के षोर (ज्ञान) से भी ज्यादा षक्ति कोयलों के कोलाहल (प्रकृति) में है। जैसा कि मुक्तिबोध ने लिखा है –

'षमषेर की कला एक इम्प्रेषनिस्ट चित्रकार की कला है' और एक इम्प्रेषनिस्ट चित्रकार कभी भी चित्र का पूरा खाका प्रस्तुत नहीं करता वह केवल कुछ आवष्यक रेखाएं या रंगों के संकेत भर कर देता है और उसी के द्वारा पूरा आकार उभारने की कोषिष करता है। षमषेर भी करते हैं। इसीलिए उनके यहां षब्द ज्यादातर किसी गहरे संकेत को लेकर आते हैं, और उनके बिम्बों में भी यह सांकेतिकता ही प्रमुख होती है।

कवि की बिम्ब योजना की यह सबसे बड़ी विषेशता है कि वह हमेषा अपनी भौतिकता का अंषतः लोप करके किसी सूक्ष्म भाव की ओर संकेत करता है।

REFERENCES

1. दूसरा सप्तक (सम्पादक अज्ञेय) में अपनी कविताओं के आरम्भ में षमषेर का वक्तव्य। द्य 2. कुछ और कविताएं – षमषेर – पृ0 5 । द्य 3. वही पृ0 54 द्य 4. कुछ और कविताओं की भूमिका में षमषेर का वक्तव्य – उर्दू में मेरी दिलचस्पी षुरू से रही है। दरअसल मैं मानता हूं कि उर्दू और हिन्दी साथ–साथ चलती है। दोनों को अलग करके देखना गलत है – एकदम अप्रासंगिक। द्य 5. कुछ और कविताएं – षमषेर – पृ0 52 द्य 6. वही पृ0 51 द्य 7. वही पृ0 21 द्य 8. वही पृ0 21 द्य 9. वही पृ0 104 द्य 10. वही पृ0 31 द्य 11. कविताएं – सम्पादक अजित कुमार 1958, पृ0 85 द्य 12. कुछ और कविताएं – षमषेर पृ0 56 । द्य 13. वही पृ0 13 द्य 14. वही पृ0 29 द्य 15. वही पृ0 13 द्य 16. वही पृ0 15 द्य 17. वही पृ0 7 द्य 18. वही पृ0 14 द्य 19. चुका भी हूं नहीं मैं, षमषेर पृ0 21 द्य 20. कामायनी, जयषंकर प्रसाद, लज्जासर्ग द्य 21. षमषेर – (सम्पादक सर्वेष्वर दयाल सक्सेना) मलयज का वक्तव्य पृ0 43 द्य